Name of the college – APSM College, Barauni, Begu.
Name – Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt – AIH & C
Lession/Plan For class – B.A, AIH&C(H), Part-1, paper-1
Date – 10-04-2021
Name of the topic – Regional dynasties – The cholas.

The cholas dynasties.
चोल वंश

मेगास्थनीज की इंडिका तथा अशोक के अभिलेखों में चोलों का उल्लेख किया गया है। 9वीं - 12वीं शताब्दी तक चोल वंश ने तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश व कर्नाटक पर शासन किया। इन राजाओं में चौथी शताब्दी के राजाओं में अंतर हेतु इतिहासकारों ने शाही चोल नाम दिया है। 8वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से पुनः चोलों की राजनीतिक सत्ता का उत्थान हुआ। इस समय तक दक्षिण भारत में राष्ट्रकूटों, चालुक्यों, पल्लवों और पांड्यों में सर्वोच्चता के लिए संघर्ष हो रहा था। पुरानी शक्तियों का पतन हो रहा था और नई शक्तियों का उदय हो रहा था। पल्लव - पांड्य संघर्षों ने पल्लवों की शक्ति कमजोर कर दी जिसका लाभ चोलों ने उठाया। 9वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक चोलों ने दक्षिण भारतीय राजनीति पर अपना आधिपत्य एवं प्रभाव बनाए रखा। अंततः पांड्यों ने चोलों की स्वतंत्र सत्ता समाप्त कर दी।
चोलों का प्रारंभिक इतिहास संगम युग से प्रारंभ होता है। करिकाल ने उरैयूर को अपनी राजधानी बनाया था।

P.T.O.

चोल वंश

1. विजयालय संस्थापक
2. आदित्य प्रथम
3. परांतक प्रथम
4. गंडरादित्य
5. परांतक द्वितीय (सुंदरचोल)
6. राजाराज प्रथम (मुम्मडि बिहार)
7. राजेन्द्र प्रथम (चोल झील निर्माण)
    8. राजाधिराज प्रथम
    9. राजेन्द्र देव द्वितीय
    10. वीर राजेन्द्र
        11. अधिराजेन्द्र

चोल-चालुक्य वंश।

मधुरांतिका + कुलोतुंग प्रथम

मधुरान्तिका का विवाह कुलोतुंग प्रथम से हुआ।

1. विक्रम चोल
2. कुलोत्तुंग द्वितीय
3. राजाराज द्वितीय
4. राजाधिराज द्वितीय
5. कुलोतुंग तृतीय
6. राजाराज तृतीय
7. राजेन्द्र तृतीय

अंतिम स्वतन्त्र चोल शासक

P.t.o

Scanned with CamScanner

प्रमुख शासक :— चोल वंश के प्रमुख शासक

(1) विजयालय 850-875 (3) पराकान्त प्रथम – (907 – 953 ई.)
(2) आदित्य प्रथम 875-907 (4) गंडरादित्य – (953 – 956 ई.)
(5) परांतक द्वितीय – (956 – 979 ई.) (6) अरिमोलि वर्मन / राजराजप्रथम (985 – 1014 ई.)

(1) **विजयालय** → (850 – 875)

विजयालय को चोल साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक भी माना जाता है। विजयालय ने पाण्ड्य शासकों से तंजौर (तंजावूर) को छीन कर उरैयूर के स्थान पर इसे अपने राज्य की राजधानी बनाया। विजयालय ने परकेसरी की उपाधि धारण की थी।

(2) **आदित्य प्रथम** – (875 – 907 ई.)

विजयालय का पुत्र एवं उत्तराधिकारी आदित्य प्रथम लगभग 875 ई. में चोल राजसिंहासन पर बैठा। आदित्य प्रथम ने 'कोदण्डराम' की उपाधि धारण की।

(3) **पराकान्तक प्रथम** → (907 – 953 ई.)

आदित्य प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र परान्तक प्रथम चोल राजगद्दी पर बैठा। परान्तक प्रथम ने 'मदुरैकोण्ड' की उपाधि धारण की थी।

(4) **गंडरादित्य** :— (953 – 956 ई.)

परान्तक प्रथम के बाद क्रमशः गंडरादित्य (953 – 956) व परान्तक

द्वितीय (956 से 973 ई.) एवं "उत्तम चोल" चोल के शासक हुए। इसमें सबसे योग्य परांतक द्वितीय था।

(5) परान्तक द्वितीय -(956 - 973 ई.)

चोल शासक परान्तक द्वितीय को सुन्दरचोल के नाम से भी जाना जाता था। उसने तत्कालीन पाण्ड्य शासक 'वीरपाण्ड्य' को चेवूर के मैदान में पराजित किया।

(6) अरिमोलि वर्मन / राजाराम प्रथम - (985 - 1014 ई.)

परान्तक द्वितीय का पुत्र एवं उत्तराधिकारी अरिमोलिवर्मन अथवा राजराज प्रथम परान्तक द्वितीय के बाद चोल राज्य के सिंहासन पर बैठा। उसने अपने परान्तक प्रथम की 'लौह व रक्त' की नीति का पालन करते हुए 'राजराज' की उपाधि ग्रहण की। राजराज ने काण्डलूर शालैकलमरूत की उपाधि ग्रहण की। राजराज ने भी लंका के उत्तरी भाग पर अधिकार करके उसे चोल साम्राज्य का एक नया प्रान्त बनाया और उसे 'मुण्डिचोल मंडलम' नाम दिया।

राजराज ने अनुराधापुर के स्थान पर पोलन्नरुआ को अपनी राजधानी बनाई तथा इसका नाम जयनाथ मंडलम रखा। राजराज ने 'शिवपादशेखर' की उपाधि धारण की। परान्तक प्रथम ने "मामुण्डी चोलमण्डलम" P.T.O.

- रखा। एवं 'पोलोन्नरूवा' को उसकी राजधानी बनाया। इन्होंने तंजावुर में 'वृहदेश्वर मंदिर' का निर्माण करवाया था।

चोल राष्ट्र या चोल मंडलम

पेन्नार और कावेरी नदियों के बीच पूर्वी समुद्र तट पर स्थित था। चोल राजाओं के अनुसार इसकी सीमाएँ भी बदलती रहती थी। इनके साम्राज्य के प्रथम केन्द्रों में उरगपुर (उरैयूर त्रिचनापल्ली के पास) कावेरीपट्टनम (कावेरी तट पर प्रसिद्ध बंदरगाह) तंजावुर (तंजौर और गंगै कोंड - चोलापुरम है।

कबायली शक्ति के रूप में तो चोलों का इतिहास मौर्यवंशी अशोक के काल तक चला जाता है। किंतु हम एक साम्राज्यिक शक्ति के रूप में चोलों की चर्चा करेंगे और इस दृष्टि से उनका इतिहास नवीं शताब्दी के अंत में प्रारंभ होता है। चोल वंश का पहला राजा विजयालय (विजयालय) हुआ। जिसने अपने बल पर स्वबल का परिचय दिया। वह पहले पल्लवों का सामंत था। उसने दक्षिण में बढ़कर तंजोर पर अधिकार कर लिया। आदित्य प्रथम - (880 907 ई.) ने चोलों को पूर्ण रूप से स्वतंत्र घोषित किया। द्रविड़ - देश में चोल - आधिपत्य की स्थापना वास्तव में प्रथम परांतक (907 - 956 ई.) के समय में हुई। उसने मदुरा के पांड्य राजा को हराया और 'मदुरैकोंड' की उपाधि ली। उसने लंका पर भी आक्रमण किया था। परांतक के पुत्रों के समय में चोलों की शक्ति कुछ समय के लिए मंद पड़ गई।

मालती कुमारी